उपसंहार

'उपसंहार' –

नवयुग की महिला कथाकारों में 'मालती जोशी' का नाम अब काफी जाना-- माना हो गया है । मालती जोशी का व्यक्तित्व और कृतित्व बहुव्यापक है । इनके जीवन के समग्र जहलूओं का मूल्यांकन करने पर दृष्टिगोचर होता है कि मध्यवर्गीय मराठी–भाषा परिवार से संबंधित यह एक पारिवारिक जीवन से जुडी संवेदनशील कहानीकार है । इसी कारण इनकी कृतियां अपने आप में मौलिक स्थान रखती है ।

मालती जोशी ने अपने आस–पास घटित घटनाओं को ही चित्रित किया है जब पारिवारिक समस्याओं से उनका मन आकुल हो उठता है तथा सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों के परिणाम स्वरुप परिवार में उफनता संघर्ष, तनाव, जब उन्हें विह्वल कर देता है, तो अनायास ही उनकी संवेदनाएँ कहानी में मुखर हो उठती है। वे प्रारंभ से ही परंपरा विरोधी तथा नवीनता की समर्थक रही है । अतः मालती जोशी ने परिवर्तनशील परिस्थिती से निर्मित सामाजिक और पारिवारिक जीवन की समस्याएँ एवं विषमताओं का रुप ही दिखलाया है।

मालती जोशी ने साहित्य का शुभारंभ गीतों से शुरु करके भी उन्हे विशेष सफलता कथासाहित्य में मिली है इसीसे वे मूलतः कथाकार है – बालसाहित्य से प्रारंभ हुआ इनका साहित्य आज रेखाचित्र, उपन्यास, एकाँकी, कहानी आदि विविध स्तर पर पहुँच गया है।

मालती जोशी की कहानियों में पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलू का दर्शन होता है। इनकी कहानियाँ का प्रमुख स्वर अभिशप्त नारी जीवन को अंकित करना। उसकी मूक वेदना को मुखर करना। आज का जीवन मनुष्य के व्यक्तित्व को टुकडो–टुकडों में बाँटने और विभिन्न वर्गो में आबध्द करने की नियति या साजिश है । माँ के रुप में नारी का व्यक्तित्व परिपूर्णता होता है । अपने इस रुप में नारी की भूमिका दोहरे व्यक्तित्व का शिव धनुष्य अपने कंधो पर उठाती रहती है । पुरुष सामाजिक संदर्भ में मुखिया भले ही हो, गृहस्थी जीवन की धुरी नारी ही होती है, उसके ऊपर दो पीढियों का दबाव होता है। एक और वह अपने से पूर्ववर्ती पीढी के सदस्यों (सास–ससुर आदि) के साथ तादात्म्य स्थापित करने की कोशिश करती है तो दूसरी ओर संतति के रुप में नई पीढी के मनोंभावों और उसकी संस्कारशीलता को आत्मसात करना उसके लिए आवश्यक होता है। इन संघर्षो के बी च उसके मनोद्वंद्व का जीवंत एवं यथातथ्य चित्रण मालती जोशी की कहानी कला की प्रमुख पहचान है ।[1]

मालती जोशी ने समकालीन समाज के बदलते स्वरुप का ही चित्रण किया है । इसके साथ ही नारी संबंधी अनेक समस्याओं का चित्रण भी इनकी कहानियों में विशदता से मिलता है ।

'श्रीमती मालती जोशी का साहित्य उनके व्यक्तिमत्व की अनुगूंज है और उनका व्यक्तित्व उनकी निणी तथा युगीन परिस्थितीयों से निर्मित हुआ है'।

इनकी कहानियाँ प्रमुखत: समसामयिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दस्ताऐवज है। इनके कहानियों में नारी मन का ऊहापोह चित्रीत हुआ है । जिस प्रकार इनकी कहानियों में विविध मुखी समस्याओं को चित्रीत किया गया है उसी प्रकार उन समस्याओं के निराकरण के संकेत भी दिए गए है । प्राय: मालती जोशी की नारी स्वतंत्रता की पक्षधर है । इनके नारी पात्र एक ओर त्याग और बलिदान के रुप में चित्रित है, तो दूसरी ओर रुढी परंपरा के निर्वाह में आबध्द नारी है जैसे विधवा जीवन पर आधारित 'सती' कहानी में 'कांता' की सास सुबह अपनी बहू की सूरत तक नही देखती ताकि उस दिन कोई अशुभ घटना घटित हो जाए, तो 'मोरी रंग दी चुनरिया' में मृणाल की सास विधवा के हाथ से कुठ चीज लेना भी अपशकुन मानती है वैसे वह युरोप जैसे प्रगतशील राष्ट्र में रहकर भी रुढी परंपरा से पीडित है ।
'एक और देवदास' 'ढाई आखर प्रेम का' 'क्षमा' कहानी नारी का त्याग और बलिदान का चित्र अंकित करती है 'ढाई आखर प्रेम का' पात्रा 'जयंती' आजीवन अपने प्रेमी के खातिर अविवाहित रहती है । 'क्षमा' की पात्रा 'सीमा' भाभी के घोर अपराध को क्षमा करके अपनी आदर्श क्षमाशीलता का परिचय देती है ।

मालती जोशी की केवल एक कहानी राजनीतिक भ्रष्ट व्यवस्था का चित्रण करती है । जैसे 'सती' की 'कांता' अपने सास, ननद, के लिए अपना जीवन ही बील चढाती है ।

दांपत्य -- जीवन में स्त्री पुरुष के संबंधो को आज के धरातल पर प्रस्तुत किया है -- इनकी कहानियों में पति-पत्नी के बीच बिखराव, तनाव एवं संघर्ष से जूझती नारी को ही चित्रित किया है उदा.: 'टूटने से जुडने तक' की नायिका, ममता और पत्नीत्व का दायित्व निभाते हुए मानसिक यंत्रणा की शिकार बनती है । 'कुहोस' में 'स्वाति' और पति के बीच समझोते के अभाव से दूरी बढती है । 'साथी' कहानी में पति-पत्नी का दृढ संबंध चित्रित है। 'कलचर' कहानी की 'काशी' पति को ही परमेश्वर मानकर उसके साथ चली जाती है । 'बोल रे कठपुतली' की 'आभा' पारिवारिक जीवन चक्र में संघर्ष करती नारी है जिसे पुरुष प्रधान

संस्कृति ने 'कठपुतली' की जिंदगी जीने पर विवश कर दिया है । 'कलंक' कहानी की 'ईलू' अंततक अपनी पत्नीत्व की रक्षा करना चाहती है । लेखिका ने दांपत्य विषयक सभी समस्याओंका चित्रण किया है । साथ ही लेखिकाने इन समस्याओं के निवारण का सुझाव भी कहानियोमें प्रस्तुत किया है ।

अंततः कहा जा सकता है कि मालती जोशी ने अपनी कहानियों में नारी संबंधित सामाजिक पारिवारिक, आर्थिक, अविवाहित, विवाहित, विधवा विषयक, अनमेल विविाह विषयक, तथा आंतर्जातीय विाह विषयक, प्रेम विषयक, संतान के अभाव से पीडित नारी विषयक, आदि समस्याओं को तथा नीत्य जीवन में पारिवारिक पृष्ठभूमि पर इन समस्याओं को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

'नौकरी पेशा' नारी का अंर्तद्वंद्व इन्होने अधिक कुशलता से चित्रित किया है जैसे 'मध्यांतर', 'आखरी सौगात', 'मोरी रंग दी चुनरिया', 'सती' आदि कहानियों में नौकरी पेशा नारी की वेदना, घुटन, विवशता ही चित्रित है ।

सारांशतः मालती जोशी ने इसतरह विविध प्रमुख समस्याओं का उद्‌घाटन करते समय कुछ अन्य आज की ज्वलंत समस्याओं की ओर ध्यान ही नहीं दिया है । जैसे मालती जोशी स्थायिक भोपाल में रहकर भी वहाँ की 'गैस स्पोट' की घटना से उससे उत्पन्न जनजीवन की समस्या से अलिप्त ही रही है । तथा इनकी कहानियों में केवल प्रेम का पवित्र पक्ष ही उजागर हुआ है । रोमांटिक प्रेम इनकी कहानियों में दिखाई नहीं देता है। साथ ही लेखिका ने उक्त कहानियों में नारी पात्र सभी आदर्श के प्रतिमूर्ति है। लेखिका ने देशकाल की अपेक्षा पारिवारिक समस्या की ओर अधिक ध्यान दिया है । फिर भी उक्त समस्याओं को देखने के बाद स्पष्ट रुप में हम कह सकते है कि मालती जोशी ने जीवन की समस्याओं को अपने साहित्य में सजगता के साथ प्रस्तुत करने में प्रभावशाली रुप में सफल रही है। इनकी समग्र साहित्य सेवा उनकी प्रामाणिकता संवेदनशीलता, भावुकता को ही प्रतिबिंबित करती है । जो अन्य महिला कथाकारों की दृष्टि से दुर्लभ है । इसी कारण मालती जोशी लेखन के प्रारंभ काल से लेकर आज तक सन्मानित एवं लोकप्रिय रही है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1) कु. अग्निहोत्री मणिक – मालती जोशी की कहानियों में नारी पात्र – पृष्ठ 132
2) पी. इन्दिरा शान्ता – मालती जोशी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना पृष्ठ 120
3) कु. अग्निहोत्री मणिक – मालती जोशी की कहानियों में नारी पात्र पृष्ठ 13